INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

रचनावाद, स्वनिर्मित सिद्धान्तों के प्रामाणिकता की एक दार्शनिक पद्धति

डॉ. विनीत कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय

सारांश

नैतिक अवधारणाओं और राजनीतिक सिद्धान्तों की प्रामाणिकता के सन्दर्भ में रचनावाद की पद्धति पर दार्शनिक विधा में बहुत ही कम ध्यान दिया गया । इमैनुएल काण्ट प्रथम ऐसे दार्शनिक हुए जिन्होने रचनावाद की पद्धति का प्रयोग नैतिक अवधारणाओं की सिद्धि के लिए किया। इस पद्धति का प्रयोग आगे चलकर रॉल्स ने भी अपने राजनीतिक दर्शन के सिद्धान्तों की प्रामाणिकता हेतु किया। यहाँ पर स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न उठता है कि राजनीतिक रचनावाद से आशय क्या है ? उपर्युक्त प्रश्नोत्तर को संक्षेप में इस बताया जा सकता है कि राजनीतिक रचनावाद वास्तव में वस्तुनिष्ठ प्रामाणिकता और प्रैक्टिकल रिजनिंग की एक विधि है, जिसके द्वारा हम अपने राजनीतिक और नैतिक निर्णयों में सन्तुलन बनाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि रचनावाद के अन्तर्गत वस्तुनिष्ठ प्रामाणिकता के माध्यम से सिद्धान्त स्थापना को स्वीकारा जाता है। " यह इमैनुएल काण्ट द्वारा तैयार की गयी पद्धति है, जिसे कालान्तर में जॉन रॉल्स ने स्वीकारा है।"[1] रचनावाद की आवश्यकता से आशय स्वनिर्मित किये जाने वाले सिद्धान को प्रैक्टिकल लेवल पर आब्जेक्टिविटी प्रदान करना है।

इमैनुएल काण्ट का रचनावाद

रचनावाद की अवधारणा का प्रथम अभिव्यक्ति इमैनुएल काण्ट के लोकप्रिय नैतिक दर्शन में दिखाई पड़ता है। “द ग्राउण्ड वर्क ऑफ द मेटाफिजिक्स ऑफ मॉरल्स” में वर्णित रचनावाद की पद्धति को अधिनीतिशास्त्र के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया। उपर्युक्त वर्णित पुस्तक में इमैनुएल काण्ट ने नैतिक दर्शन की आधारभूत समस्याओं यथा नैतिकता मनुष्य की भावनाओं (इच्छाओं) पर निर्भर न होकर मनुष्य की शुद्ध कर्तव्य चेतना पर निर्भर होती है आदि विषयों का विस्तृत स्पष्टीकरण किया है। इसके साथ ही साथ

उन्होने अपने नैतिक दर्शन में व्यावहारिक लेवल पर जाने-समझे जाने वाले विचारों एवं भावनाओं (Emotions) को एक साथ जोड़ा है। इमैनुएल काण्ट ने इस सन्दर्भ में यह भी कहा कि वस्तुनिष्ठता को व्यावहारिक प्रामाणिकता के तौर पर स्वीकारा जाना चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि उन्होने नैतिक क्षेत्र में इमोशन्स की जगह रीजन को महत्व दिया। काण्ट के नैतिक दर्शन की मान्यता है कि वही नियम नैतिक नियम हो सकता है, जो यूनिवर्सल हो अर्थात जिसे समान परिस्थितियों में सभी मनुष्यों पर समान रुप से लगाया जा सके।" अतः इन सार्वभौम नैतिक नियमों की उत्पत्ति मनुष्य की परिवर्तनशील भावनाओं में न होकर केवल बुद्धि (Reason) में ही हो सकता है, क्योकि यह सभी मनुष्यों में समान रुप में निहित होता है और यही बुद्धि ही व्यक्ति को अन्य दूसरे प्राणियों से भिन्न बनाता है। इस प्रकार संक्षेप में इमैनुएल काण्ट के रचनावाद का सार यह है कि "किसी कर्म का नैतिक मूल्य उस कार्य के परिणामों द्वारा नहीं बल्कि उस कार्य के मूल में निहित मनुष्य की कर्तव्य चेतना द्वारा ही निर्धारित होता है।"[2]

इमैनुएल काण्ट के मतानुसार पहले के लगभग सभी नैतिक सिद्धान्त, नैतिक दायित्वों का स्पष्टीकरण करने में असफल रहे, क्योंकि वे सभी नैतिक सिद्धान्त प्रैक्टिकल रीजन के अनुरुप नहीं थे। पूर्व में प्रचलित नैतिक सिद्धान्त यह भी समझाने में असफल रहे कि एक व्यक्ति के जीवन में व्यावहारिक बुद्धि कैसी भूमिका निभाती है? इमैनुएल काण्ट का यह आरोप पूर्व के लगभग सभी नैतिक सिद्धान्तो पर खासतौर से भावुकता और हठधर्मी तर्कवाद को सम्बोधित करते है। डेविड ह्यूम द्वारा समर्थित भावुकतावाद (sentimentalism) में यह मान्यता प्रचलित है कि "नैतिक निर्णय इमोशन्स से उत्पन्न होते है और आर्गयूमेन्ट अपने आप में हमें कोई कार्य करने हेतु प्रेरित करने में असफल है।"[3] इससे स्पष्ट है कि उपर्युक्त नैतिक मान्यता में तर्क की भूमिका पूर्णतः सहायक वनकर रह जाती है। इमैनुएल काण्ट ने अपने नीति दर्शन में सर्वप्रथम इस प्रश्न पर विचार दिया कि ऐसी कौन सी वस्तु है जो स्वतः शुभ है ? जिसका शुभत्व परिस्थितियों, मनुष्यों की भावनाओं और देश-काल पर निर्भर न हो। इसका उत्तर देते हुए उन्होने कहा है कि केवल शुभ संकल्प (गुड विल) ही निरपेक्ष शुभ है, जिसका शुभत्व देश-काल, परिस्थितियों और व्यक्तियों की भावनाओं पर आधारित नहीं है। क्योंकि इस शुभ संकल्प की उत्पत्ति केवल बुद्धि में हो सकता है, और इसी गुड विल द्वारा मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा मिलता है। इससे स्पष्ट है कि गुड विल सर्वत्र स्वतः शुभ है। इमैनुएल काण्ट का मानना है कि "इस संसार में अथवा इस संसार के बाहर

निरपेक्ष शुभ संकल्प से इतर अन्य किसी दूसरी वस्तु की कल्पना करना लगभग असम्भव है जो स्वत: निरपेक्ष रूप से शुभ हो।"[4]

शुभ संकल्प का कर्तव्य के साथ गहरा सम्बन्ध है। यहाँ पर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि कर्तव्य से इमैनुएल काण्ट का क्या तात्पर्य है? इस सन्दर्भ में उनका मानना है कि कर्तव्य में एक तरह की अनिवार्यता अथवा वाध्यता का बोध दिखाई पड़ता है जो एक मनुष्य को स्वयं के कार्य का पालन करने के लिए वाध्य करता है चाहे उस व्यक्ति की इच्छा उस कार्य को करने की हो या न हीं हो। कर्तव्य को व्याख्यायित करते हुए इमैनुएल काण्ट ने कहा है कि " नैतिक नियम के प्रति सदैव आदर की भावना से प्रभावित होकर कार्य करने की वाध्यता ही कर्तव्य है।"[5] कर्तव्य चेतना द्वारा मनुष्य को ऐसे कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है जो उसके स्वाभाविक प्रवृत्ति के प्रतिकूल होते हुए भी उसका कर्तव्य है इसलिए इमैनुएल काण्ट ने मनुष्य की कर्तव्य चेतना को ही सम्पूर्ण नैतिकता का आधार माना है।

इमैनुएल काण्ट के मेटाएथिकल रचनावाद का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण पहलू निरपेक्ष आदेश (Categorical Imperative) है। इसको ही उन्होंने नैतिकता का सर्वोच्च नियम बताया है। नैतिक नियम के अन्तर्गत आदेश को एक तरह से वाध्यता के तौर पर माना जाता है। अत: आदेश शब्द किसी व्यक्ति को कोई कार्य करने अथवा न करने हेतु वाध्य करता है। उनके दर्शन में यह मान्यता है कि यह वाध्यता वाह्य न होकर आन्तरिक होती है। काण्ट ने अपने नीति-दर्शन में सभी आदेशो को दो वर्गों में विभाजित किया है पहला सापेक्ष आदेश और दूसरा निरपेक्ष आदेश । यहाँ सापेक्ष आदेश से आशय उस आदेश से है। जिसमें किसी दूसरे उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधन के रूप व्यक्ति को किसी कर्म करने अथवा न करने के लिए वाध्य किया जाता है। उदाहरण स्वरुप यदि कोई विद्यार्थी वार्षिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करना चाहता है तो उसे निश्चित रूप से अधिक से अधिक पढ़ाई करना चाहिए। उपर्युक्त तथ्य से स्पष्ट है कि सापेक्ष आदेश सशर्त होता है और इससे प्रेरित कार्य स्वत: साध्य न होकर किसी अन्य उद्देश्य की प्राप्ति का केवल साधन है। निरपेक्ष आदेश को व्याख्यायित करते हुए इमैनुएल काण्ट ने कहा है कि "निरपेक्ष आदेश वह आदेश है जिसमें किसी कार्य को किसी अन्य उद्देश्य की पूर्ति का साधन न मानकर स्वत: शुभ व अनिवार्य माना जाता है।"[6] सार्वभौमिकता को इमैनुएल काण्ट ने कटेगोरिकल इम्प्रेटिव की अनिवार्य शर्त माना है। इसके साथ ही साथ उन्होने यह भी कहा है कि हमें किसी भी नैतिक नियम के अनुसार

व्यवहार करने से पहले स्वयं से यह सवाल पूछना चाहिए कि क्या इसे हम सावभौमिक नियम के रूप में अपना सकते है।

जॉन रॉल्स का राजनीतिक रचनावाद (पॉलिटिकल कन्सट्रक्टीविजम)

जॉन रॉल्स जिस राजनीतिक रचनावाद का स्पष्टीकरण करते हैं उसे वे काण्टीय रचनावाद की संज्ञा देते हैं। उनके रचनावाद का मुख्य लक्ष्य न्याय की एक ऐसी सार्वजनिक धारणा को निर्मित करना है, जिसमे नागरिक तभी जीवन व्यतीत कर पायेंगे जब वे अपने व्यक्तित्व और सामाजिक रिलेशन्स को विशेष के रूप में देखते हो। उल्लेखनीय है कि जॉन रॉल्स ने "अपने पॉलिटिकल कन्सटर्क्टीरिजम को आकार और स्वरुप देने के लिए समाज एवं व्यक्ति की अवधारणाओं को स्पष्ट किया है।"[7] संक्षिप्त रूप में रॉल्स ने व्यक्ति एवं और समाज की जिस अवधारणा को प्रस्तुत किया वह है सुव्यवस्थित समाज का समान एवं स्वतंत्र नागरिक के तौर पर नैतिक व्यक्ति की अवधारणा । जॉन रॉल्स के मतानुसार " राजनीतिक रचनावाद समकालीन समय में स्वनिर्मित किये जाने वाले सिद्धान्तों की प्रामाणिकता के लिए सबसे उपयुक्त दार्शनिक पद्धति है।"[8]

यहाँ एक प्रश्न स्वाभाविक रुप से उठता है कि राजनीतिक रचनावाद से आशय क्या है? इसके उत्तर में हम राजनीतिक रचनावाद का स्पष्टीकरण तीन प्रश्नोत्तर द्वारा कर सकते है जो इस प्रकार है- पहला प्रश्न, रचनावाद के अन्तर्गत क्या निर्मित (Constructed) किया जाता है? उत्तर- न्याय के राजनीतिक अवधारणा की विषय-वस्तु। यह विषय वस्तु 'निष्पक्षता के रूप में न्याय की मूलस्थिति में पक्षों द्वारा चयनित न्याय के सिद्धान्त है। इसमें उन हितों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाता है, जिनका वे प्रतिनिधित्व करते है।

दूसरा प्रश्न-प्रतिनिधित्व के प्रक्रियात्मक उपकरण के रुप में क्या मूलस्थिति (Original Position) स्वतः निर्मित है? उत्तर नहीं। इसको बस कल्पित किया गया है। इसकी परिकल्पना हम एक सुव्यवस्थित समाज के मूलभूत विचार से करते है, जो कि बौद्धिक एवं तर्कसंगत नागरिकों के मध्य सहयोग की निष्पक्ष व्यवस्था है। इसमें व्यक्तियों को स्वतंत्र एवं समान नागरिक माना जाता है, बाद में हम एक प्रक्रिया तय करते हैं, जो पक्षों पर लागू होने वाले उचित शर्तों को निर्धारित करती है। जिससे कि समाज की मूल संरचना के लिए न्याय के सार्वजनिक सिद्धान्तों का चयन हो सके। "इस प्रकार सुव्यवस्थित समाज,

सहयोग करने वाले नागरिकों के राजनीतिक अधिकार और न्याय की सामग्री को आकार प्रदान करता है।"[9]

तीसरा प्रश्न- यह कहने का आशय क्या है, कि नागरिक एवं सुव्यवस्थित समाज की संकल्पना रचनात्मक प्रक्रिया में अन्तर्निहित है? उत्तर प्रक्रिया का स्वरूप और इसकी विशेषताएं उन अवधारणाओं से निर्मित हैं, जिनको इसका आधार माना जाता है। उदाहरण स्वरूप नागरिकों के पास दो नैतिक शक्तियां होती हैं, प्रथम-न्याय के भावना की क्षमता और द्वितीय अच्छे की अवधारणा की क्षमता।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि राजनीतिक रचनावाद राजनैतिक अवधारणाओं की संरचना एवं सामग्री हेतु एक दृष्टिकोण है और यह राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित है। रॉल्स ने राजनीतिक रचननावाद के माध्यम से अपनी कृति पॉलिटिकल लिबरलिज्म को वस्तुनिष्ठता की एक उचित अवधारणा प्रदान किया। इसमें सिद्धान्त निर्माण की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से व्यावहारिक कारणों पर आधारित है न कि सैद्धान्तिक कारणों पर। यहाँ व्यावहारिक कारणों से आशय वस्तुओं के उत्पादन से है जबकि सैद्धान्तिक कारणों का तात्पर्य वस्तुओं के ज्ञान से सम्बन्धित है। हम जानते है कि सिद्धान्त निर्माण की प्रक्रिया में व्यावहारिक कारणों के साथ-साथ सैद्धान्तिक कारणों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है, इसीलिए व्यक्ति न्याय के सिद्धान्तों का चयन करने में तर्क एवं अपने निर्णय की सामान्य क्षमताओं का भी प्रयोग करता है।

काण्ट के नैतिक रचनावाद और रॉल्स के राजनीतिक रचनावाद दोनों में वस्तुनिष्ठता (Objectivity) मौजूद है। किन्तु नैतिक एवं राजनीतिक सन्दर्भों में वस्तुनिष्ठता को अलग-अलग तरीकों से समझा गया है। "राजनीतिक रचनावाद अपने सीमित राजनीतिक उद्देश्यों के लिए निष्पक्षता को एक उचित आधार प्रदान करता है।"[10]

- ❖ वस्तुनिष्ठता की पहली आवश्यकता यह है कि निष्पक्षता की अवधारणा को सर्वप्रथम एक सार्वजनिक रूपरेखा को निर्मित करना चाहिए। जिससे कि उचित चिन्तन के बाद कारणों और साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष तक पहुँचा जा सके।

- ❖ वस्तुनिष्ठता की दूसरी विशिष्टता यह है कि इसमें हम बौद्धिक या युक्तियुक्त निर्णयों द्वारा एक उचित निर्णय लेने का लक्ष्य रखते हैं, जो एक उचित प्रक्रिया द्वारा व्यावहारिक कारणों द्वारा समर्थित होता है।

- ❖ इसकी तीसरी विशेषता यह है कि एक परिणाम के रूप में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण और व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण के मध्य अन्तर होता है। सामान्यतौर पर किसी व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण को वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण के अनुरूप बनाने के लिए सदैव विचार और निर्णय की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह सार्वजनिक आधार के लिए आवश्यक है।

रॉल्स के मान्यतानुसार निष्पक्षता की आवश्यकता व्यवहारिक है। यह उन परिस्थतियों में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, जिसमें लोग इस बात को लेकर असहमत होते हैं कि उपलब्ध विभिन्न विकल्पों में किसे महत्व देना चाहिए। यहाँ पर रॉल्स, इमैनुएल काण्ट के इस कथन से सहमत है कि हमे आन्जेक्टिविटी को व्यावहारिक आवश्यकता के सन्दर्भ में स्वीकारना चाहिए, जिससे कि नैतिक असहमतियों के ऊपर हम व्यावहारिक स्तर पर विमर्श कर उनका समाधान कर सके।

ए थ्योरी ऑफ जस्टिस और पॉलिटिकल लिबरलिज्म नामक रचनाओं के माध्यम से जॉन रॉल्स ने लगभग दो देशको तक अपने विचारों को विकसित किया और एक आदर्श राजनीतिक व्यवस्था जिसका आधार न्याय हो, उसे साकार रुप प्रदान किया। इस आदर्श राजनीतिक व्यवस्था की निर्माण सामाजिक सहमति से हुआ है, जो अपने स्वरूप में उदारवादी है। इस प्रकार जॉन रॉल्स ने उपर्युक्त रचनाओं के माध्यम से आदर्श राजनीतिक व्यवस्था की प्रक्रिया, शर्ते और बनने के पश्चात् उसमें रहने वाले लोगों के विभिन्न पहलुओं का उच्च स्तरीय अमूर्त दर्शन प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि सामाजिक सहमति के लिए मूलअवस्था की अवधारणा सभी को उपयुक्त लगती है भले ही वह किसी विशिष्ट सिद्धान्त को स्वीकारे अथवा अस्वीकारे। इस प्रकार मूल अवस्था की सर्वथा उपयुक्त संकल्पना को स्वीकारने से न्याय के जो सिद्वान्त हमारे सम्मुख आते है, वे अन्तः प्रज्ञावाद (सहजवोधवाद) और उपयोगितावाद इन दोनों से भिन्न होते है। इसलिए सामाजिक समझौते का सिद्धान्त उपर्युक्त वर्णित दोनों सिद्धान्तों की विकल्प प्रस्तुत करता है। न्याय सिद्धान्त के रूप में उपयोगिता और अन्तःप्रज्ञावाद की आस्वीकृति का कारण यह है, कि

उपयोगितावाद में इन्डीविड्यूअल के महत्व को गम्भीरता से नहीं लिया जाता है वहीं अन्तः प्रज्ञावाद में व्यक्ति को तो महत्त्व दिया जाता है परन्तु यहां पर व्यक्ति की वौद्धिकता को कम महत्व दिया गया। इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है, कि जॉन रॉल्स ने अपने राजनीतिक रचनावादी दृष्टिकोण से चिन्तन मनन का ऐसा सन्तुलन निर्मित किया जो तरफ भावनात्मक तो दूसरी तरफ विवेकशीलता से जुड़ा है।

निष्कर्ष -

- राजनीतिक रचनावाद में वस्तुनिष्ठता की अवधारणा के अन्तर्गत नैतिक सत्य की प्राप्ति में किसी के विशेषाधिकार को नहीं स्वीकारा जाता है अपितु क्या करना, कैसे करना है? इस विषय में विचार करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार मिला है। इस प्रकार स्पष्ट है कि नैतिक दर्शन में राजनीतिक रचनावाद पर रॉल्स की विवेचनाओं ने व्यापक साहित्य को निर्मित किया।
- काण्टीयन रचनावाद की मुख्य ध्येय यह है कि नैतिक निर्णयों को उचित सिद्ध करने वाले तर्कों का परीक्षण स्वयं करना चाहिए।
- काण्ट का नैतिक दर्शन हमारे प्रैक्टिकल लाइफ में कर्तव्यों को दिशा निर्देशित करने में उपयुक्त सीमा तक सहायक साबित होता है।
- जॉन रॉल्स ने मुख्य रुप से वहुलवादी सन्दर्भों में उत्पन्न होने वाली सन्तुलन की समस्याओं के समाधान हेतु राजनीतिक रचनावाद की पद्धति को निगमित किया।

उपर्युक्त विवेचित तथ्यों के सार के रुप में यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक रचनावाद समकालीन समय में स्वनिर्मित सिद्धान्तों के प्रामाणिकता हेतु सर्वाधिक उपयुक्त एक दार्शनिक पद्धति है।

सन्दर्भ

1. फ्रीमैन, सैमुअल, *रॉल्स*, रुटलेज, लन्दन एण्ड न्यूयार्क, अध्याय 1, पृ० सं०, 38

2. वर्मा, डॉ. वेद प्रकाश, *नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त*, एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ० सं०, 213

3. नारमन, कैम्प, स्मिथ, *द फिलॅसकी ऑफ डेविड ह्यूम*, पृ. स. 12.

4. काण्ट, इमैनुअल, *ग्राउण्डवर्क ऑफ द मेटाफिजिक्स ऑफ मॉरल,* पृ. सं. 62

5. वर्मा, डॉ वेद प्रकाश, *नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त,* एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड. नई दिल्ली, पृ. स. 218

6. काण्ट, इमैनुअल, *ग्राउण्डवर्क ऑफ द मेटाफिजिक्स ऑफ मॉरल्स,* एच. जे. पेटेन (अनु.) पृ.सं. 67

7. *द इंडिपेन्डेंस ऑफ मोरल थिअरी,* प्रोसीडिंग एण्ड एड्रेसस ऑफ अमेरिकन फिलासोफिकल एशोसिएशन, 1974।

8. टैमपियो, निकोलस, *ए डिफेन्स ऑफ पॉलिटिकल कन्सट्रक्टिविज्म,* मैकमिलन पब्लिसर्स लिमिटेड, पृ. सं. 1-19

9. रॉल्स, जॉन, *पॉलिटिकल लिबरलिज्म,* कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, पृ. सं. 103

10. रॉल्स, जॉन, *पॉलिटिकल लिबरलिज्म,* कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क पृ, सं. 110

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.